[illegible] ॥१३॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥१४॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥१५॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]

न. क. १०

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

न: कृ० ३३

[illegible]

𑆮𑆣𑆱𑆁𑆠𑆥𑆸𑆪𑆶𑆱𑆶𑆚𑆁𑆠𑆩𑆳𑆬𑆴𑆠𑆳
𑆱𑇀𑆩𑆤𑆂 𑇆 𑆤𑆴𑆣𑆶𑆬𑆁𑆪𑆱𑆩𑆼𑆓𑆸𑆁𑆱𑆼
𑆠𑆼𑆠𑆸𑆁𑆣𑆶𑆳𑆥𑆴𑆠𑆱𑇀𑆪𑆩𑆂 𑇆 𑇘 𑇆 𑆣𑆶𑆱𑇀𑆪𑆫
𑆬𑆶𑆑𑆽𑆩𑆳𑆫𑆼𑆑𑇀𑆫𑆵𑆤𑆴𑆠𑆼𑆪𑆳𑆛𑆴𑆮𑆴𑆁𑆱
𑆠𑆴𑆂 𑇆 𑆬𑆮𑆪𑆳𑆓𑆶𑆱𑆑𑆼𑆤𑆱𑇀𑆪𑆪𑆳𑆢𑆑
𑆤𑇀𑆣𑆱𑇀𑆪𑆮𑆴𑆁𑆱𑆠𑆴𑆂 𑇆 𑇙 𑇆 𑆑𑆶𑆫𑆳𑆥𑇀𑆫𑆮𑆼𑆬𑆑
𑆩𑆤𑆨𑆴𑆑𑆼𑆤𑆤𑆩𑆮𑆬𑇀𑆬𑆵𑆮𑆩𑆳 𑇆 𑆱𑆼𑆣𑆁𑆝
𑆑𑆼𑆣𑆩𑆠𑇀𑆫𑆱𑇀𑆪𑆣𑆶𑆩𑆠𑆱𑇀𑆪𑆳𑆥𑆣𑆳𑆠𑆴𑆑𑆴
𑆠 𑇆 𑆑𑆽𑆝𑆑𑆼𑆣𑆣𑆩𑆳𑆑𑇀𑆩𑆠𑇀𑆫𑆩𑆑𑇀𑆩𑆤
𑆩𑆳𑆬𑆴𑆠𑆮𑇀𑆪𑆶𑆣𑆂 𑇆 𑆱𑇀𑆫𑆑𑆥𑆳𑆱𑆼𑆤𑇀𑆢𑆶𑆱𑆼
𑆣𑆶𑆠𑆑𑇀𑆩𑆑𑆼𑆠𑆮𑆴𑆨𑆴𑆱𑆴𑆠𑆩𑆳 𑇆 𑇑𑇐 𑇆

[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥

तेजस्त्वमी ॥ १५ ॥ विश्वनाथो
मनस्तत्त्वं स्वच्छलोकपवनः
ल्पतेवे ॥ यः श्रीपथप्रज्ञाविधि
ज्ञवः तमः पुष्पेतप्रवि
प्रभोः ॥ १६ ॥ यतेनकस्मिन्नुम
तंत्र विश्वश्रीनः श्रमज्ञानमंत्र
ममत्तः ॥ विभेमितंकुमम्मसं
विकारेश्रीः स्मणीयविनवेवि
मनः ॥ १७ ॥ ततोविश्रव
दक्षिणदक्षिणे मदेषु अङ्कं विष
यस्त्वकेषु ॥ तपेतन्मपाव

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

न्यितः ॥ ११ ॥ केवलं तठवानन्न
श्रुपः परमेश्वरः ॥ भगवतां हिते
स्वदृष्टे संप्रवृत्तं नमत ॥ १२ ॥ उ[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १३ ॥ [illegible]
भगवतः [illegible]
[illegible] परमेश्वरः ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १४ ॥ [illegible]
[illegible]

[illegible] ॥ ३७ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ३१ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ३३ ॥ [illegible]

इति श्रीभगवते महापुराणे
एकादशस्कन्धे [illegible]
उपदेशो : [illegible]

[illegible] ॥ ॥ ॥ ॥

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

33

[illegible]

नाङ्गिलानुपतपः सुतेसत्त्वैलः
पुरुवकलपेकधर्म्मिर्वैगः ॥ न
गणनायकिटवत्रिपरस्तुंमेडस्तु
तेधरणावन्नलपुयपयव ॥ १ ॥
विधुच्छिधनुर्यतङ्कवविद्भन
टपकरविधविभावाक्तुपमंव
विधूर्मा ॥ महेतकद्वितमनेवमने
कितञधूर्धनातिमटलंनच
कुविभानः ॥ २ ॥ नैवाङ्घनः धृ
संयनिलाटपलैमानंलना

पुं. स्तुं.
२७

हविष्णुः कृष्णो लेखे स्थितः ॥ ब्रह्मल्ल
नेवग्वतेविक्रमितमनं तु ब्रह्मरूपे
धृतिमापश्रुयघमापसी: ॥ ३ ॥
तुष्कृकृत्विगतविल्लावंस्त्रग्ष्र ।
मचाङ्कनमक्तिण्णु भिमघमनी
घमा ॥ नीमिल्लयघ्नविमनम
तत्वविष्णुः प्रार्थितो येन किं अन्यत्
वर्तितेन ॥ ५ ॥ अहं च ब्रह्मा विष्णु
कन्भुवमजुद्भृग्रुक्रू ण्वेवयुर्वे स्मि+
नमेब्रिग्नलतुः ॥ ब्रह्म यज्ञतवो

[illegible]

[illegible] ॥ ८ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ १ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ॥ ३

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ॥ ७

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

यत्स्मिन्स्तुत्वगणन्त्र विधत्ते
गुणाभितोपकारगुणानामवन्तं समस्तः ॥००
वल्लभेन्दुसमं धियोर्वाभिदन
सुगमपद्धति सल्लेखैः ॥ तपस्
तनुति विधिं तत्र मित्रवाग्वि
तत्र हंसंस्फुटकिंतनमा ॥ ११ ॥
यथा जितेन्द्रियं दिवेन समयश्रयमह
मैवयपयमुत्यभूपरः परेव ॥ त
वः कोऽति विकोऽतिभयपयुतवः स
हो मितभूमपिलं तवतः शुद्धमा

पं०
शु०
४०

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

लवैः समयज्ञर्यैः ॥ १३ ॥ ज्ञानि

लः पुरुषं सत मेधि किंचित्

स्वैरकालज्ञ तव नकस्य ॥ नमः

नर तर्वधु नवैर्भयायन्धिः

सिद्धिपक्षकः पुराणः ॥ १४ ॥ नै

यायवरभद्रुवै नभूः सूतेव

यः सुख चिन्ताशुयापि ॥ अमेव

याभुरवैवित्तयुअमः सेवानु

यसुखेनयायवरुभा ॥ १५ ॥ एवं

लं निपद्धि पुरुषं किंत्र्यै कम

ति कंभमनयः पुयतत्त्व समुह्ना ॥ न

[illegible] ||
[illegible] ||
10 || [illegible]
[illegible]
[illegible] || [illegible]
[illegible]
[illegible] || 11 || [illegible]
[illegible]
[illegible] || [illegible]
[illegible]
[illegible] || 12 || [illegible]

वं श्रुते वेभययकस्त्रपावश्लिष्टि

वंहृपात्र ॥ यक्षृश्रुलन्मनिणवं

श्लिष्टिगीत्व्रं मत श्रीतश्रेवयश्रुक

लवक्षश्रितवेः ॥ १८ ॥ तृश्रुक्षम

स्त्रनिलगाश्लिलवभुमहृसयेत्र

स्त्रन निलभापान्तठवेनिगीतः ॥

येगेनमीलितक्षगास्त्रनिपीतनिश्रु

भुदेश्लिते नाउतमे नतुं श्रवदृ ॥

तश्रीवतेवभविंफनिलकन्लसत्त्र

मश्लिक्षितधृजतिपत्र्लं श्रस्त्रगुठमा ॥

१४॥

[illegible] ॥ १७ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १० ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥ ३० ॥
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ३१ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥
३२ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ३३ ॥

𑆩𑆾𑆤𑆱𑆶𑆠𑆱𑆷𑆠𑆥𑆼𑆞𑆪𑆤𑆑𑇀𑆰𑆟𑆩𑆢𑆳𑆒
𑆫𑆢𑇀𑆫𑆴𑆬𑆥𑆨𑆩𑆳𑆟𑆪𑆠𑇀𑆫𑆥𑆮𑆤𑆶𑆂 𑇆 𑆥𑆶
𑆪𑆂𑆥𑆜𑆁𑆥𑆶𑆑𑆣𑆠𑆼𑆢𑆶𑆬𑆴𑆠𑆼𑆑𑇀𑆰𑆴𑆪𑆁𑆮
𑆓𑆶𑆜𑆮𑆤𑆶𑆠𑆤𑆮𑆫𑆶𑆠𑆫𑆷𑆨𑆴𑆑𑆤
𑆟𑆳 𑇆 𑇑𑇗 𑇆 𑆓𑆶𑆥𑆼𑆕𑆩𑆼𑆩𑆱𑆵𑆝𑆮𑆮
𑆱𑆨𑆰𑆷𑆤𑆵𑆬𑆮𑆶𑆓𑆮𑆴𑆮𑆤𑆱𑆳𑆁𑆤𑆶𑆱𑆠𑇀𑆫
𑆥𑆑𑆱𑇀𑆪 𑇆 𑆥𑆶𑆓𑆂𑆃𑆨𑆑𑇀𑆰𑆜𑆪𑆠𑇀𑆮𑆴
𑆨𑆴𑆠𑇀𑆫𑆠𑆼𑆝𑆶𑆁𑆪𑆼𑆠𑆴𑆤𑆮𑆑𑇀𑆫𑆴𑆨𑆴𑆮𑆱𑆑𑇀𑆰
𑆤𑆳𑆠𑇀𑆫𑆠𑆂𑆑𑇀𑆰𑆶𑆠𑆾 𑇆 𑇑𑇘 𑇆 𑆠𑆶𑆁𑆮𑆥𑇀𑆪𑆫𑆥𑇀𑆫𑆴𑆮
𑆮𑆤𑆴𑆖𑆴𑆪𑆱𑆤𑆶𑆨𑆳𑆇𑆥𑆷𑆬𑆼𑆑𑇀𑆰𑆴𑆪𑆳𑆬𑆴

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] नः परमहंस[illegible]

॥ २२ ॥ इति श्रीभागवते महापुरा

णे सप्तमस्कन्धे [illegible] ॥ ॥

[illegible] नमो नारायणाय ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ १ ॥ [illegible]

इति श्री भागवते ॥ महापुराणे सप्त मस्कन्धे [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ऽमेतदधीते गोविन्दार्पितचेता यो गोविन्दाच्युत माधव विष्णो गोकुलनायक कृष्णेति ॥ गोविन्दाङ्घ्रिसरोजध्यानसुधाजलधौतसमस्ताघो गोविन्दं परमानन्दामृतमन्तस्थं स तमभ्येति ॥ ८ ॥ इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचितं गोविन्दाष्टकम् ॥

ॐ श्री विवेकः ॥ [illegible] ॥ ॥ सर्ववेदान्तसिद्धान्तगोचरं तमगोचरम् । गोविन्दं परमानन्दं सद्गुरुं प्रणतोऽस्म्यहम् ॥ जन्तूनां नरजन्म दुर्लभमतः पुंस्त्वं ततो विप्रता तस्माद्वैदिकधर्ममार्गपरता विद्वत्त्वमस्मात्परम् । आत्मानात्मविवेचनं स्वनुभवो ब्रह्मात्मना संस्थितिर्मुक्तिर्नो शतजन्मकोटिसुकृतैः पुण्यैर्विना लभ्यते ॥

[illegible]

𑆱𑆩𑆪𑆁𑆱𑆷𑆑𑇀𑆰𑆶𑆠𑆴𑆫𑆴𑆮𑆴𑆣𑆁𑆤𑆼𑆫𑆾𑇅 ॥ 𑆯
𑆫𑇀𑆮𑆑𑇀𑆰𑆴𑆠𑇀𑆫𑆼𑆩𑆾𑆠𑇀𑆫𑆶𑆩𑆼𑆑𑆁𑆥𑇀𑆫𑆭𑆁𑆠𑆪𑆡𑆥
𑆫𑇀𑆨𑆳 ॥ 𑆱𑆜𑆩𑆱𑇀𑆮𑆥𑆁𑆮𑆴𑆧𑆑𑇀𑆫𑆶𑆠𑆩𑆼
𑆑𑆁𑆪𑆴𑆥𑆳𑆩𑆴𑆠𑆴 ॥ 𑆱𑆴𑆢𑇀𑆢𑆜𑆩𑆑𑇀𑆰𑆴𑆢𑆼
𑆑𑆶𑆩𑆁𑆮𑆴𑆑𑇀𑆰𑆴𑆠𑇀𑆫𑆼𑆮𑆴𑆑𑆳𑆪𑆴𑆭𑆴 ॥ 𑆩𑆳
𑆑𑇀𑆰𑆴𑆤𑆶𑆬𑆼𑆥𑆶𑆠𑆴𑆢𑆶𑆠𑇀𑆫𑆶𑆭𑆵𑆮𑆁𑆱𑆠
𑆡𑆫𑆴𑆤𑇅 ॥ 𑆱𑆜𑆩𑆱𑇀𑆮𑆮𑆡𑆳𑆫𑆑𑇀𑆰𑆶
𑆫𑆮𑆴𑆱𑇀𑆮𑆑𑆳𑆢𑆩𑆱𑇀𑆮𑆼𑆠 ॥ 𑆯𑆮𑆴𑆑𑇀𑆰𑆴𑆠𑆁
𑆝𑆠𑆱𑇀𑆮𑆑𑇀𑆫𑆮𑆴𑆑𑇀𑆰𑆼𑆢𑆱𑆶𑆮𑆴𑆑𑆭𑇀𑆥𑆠𑇅 ॥
𑆯𑆮𑆴𑆑𑇀𑆰𑆴𑆠𑆱𑆥𑇀𑆫𑆭𑆁𑆤𑆩𑆼𑆑𑆶𑆁𑆥𑆴𑆠𑆴
𑆥𑆱𑇀𑆮𑆼𑆠 ॥ 𑆠𑆶𑆩𑆱𑇀𑆮𑆳𑆑𑇀𑆰𑆴𑆮𑆳𑆠𑆼𑆑𑇀𑆰𑆩𑆳

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

यथा किं क्रत्र भाव्या पागुल विधिस्तैयः ॥
विशिष्टविष्णुस्वरूप नमस्ते नमस्तुते स्त
तेः परिपूर्णशुद्ध ॥ ३ ॥ नमोस्तुते न
मतवाक्छिप्य पक्ष्यं श्रियापतं वक्ष
भिल्लालितं धियैः ॥ श्रुत्वा तु मते न
लगाद्दिवं धराखेयं भनीच्छैर्यं मोभव
वल्लितैः ॥ ७ ॥ लगाद भक्तिद्रुतं स्मृ
लगात्र्लगाक्ष्यस्युयः ॥ भचक्रतेश्चमं
भत्वाक्षेत्रं तेषां च्यवः ॥ ०० ॥ ॐ
कृष्ण वासुदेवं भवामामविधयः
धभाना ॥ वासुदेव मक्ते कृ न तव
नेवलगन्नयः ॥ ०० ॥ कृ देकृ वल
कृतं देवलमा पावते कृतः ॥ गोविं
नामोरभद्रं भाय यसावक्त्रदुपदा ॥ ०० ॥

गी॰ प्र॰ सु॰ ५५

पंकजमेध्यावतमभा ॥ कनककमि
वमंगद्भवक्तुण्डलाहुंकमलविमले
ईमाव्रजंरभभीहे ॥ ०१ ॥ सुरेंद्रवध
कधंमाद्धाखुध्यवंधराउःश्रितमा ॥
पश्रिद्वध्यध्यप्ससुमाव्रहुतपति
यये ॥ ०३ ॥ वदत्यायजंतभुरेंद्रयः
पठसुत्रिभंयुउः ॥ मभहुतपिल्ले
पपैः पर्वद्रक्रपिणासुति ॥ ०७ ॥
धरत्रीयःपठेकुलारभंकृद्रिति
पयम ॥ भंवद्भुरल्लतउेवहुय
मपिधरकुमा ॥ ३० ॥ मवाक्कुम
नवाधेतिरममञ्जुधुमाकउः ॥
उहुष्पद्भरमायल्लेशल्लकुले
मफल्लाभुतिःममायुः ॥ ॥ ॥

श्री.
सू.
स्तु.
५८

ते विशेषण्तवग ॥ तेनमस्तेस
मग्लेच्छ्रनमः सीत मन्येस ॥ न
मस्तुभ्यं कर्म ॥ नमस्तेजगद्गुल
० ॥ नमो नत्त्वप्रसात्तप्यमपष
मित्रे लक्ष्मी ॥ नमः सुग्रीवमित्र
य शुद्धं पतये नमः ॥ ७ ॥ लक्ष्म
णे तिनमस्कारं सुशमनद्धन ॥
शैलेनद्गुप्तवेनाभिश्च नमुण्यन
मेनमः ॥ ८ ॥ नमाभिल्लगत्सम
नमेवपितृतिभूय नमो ॥ नमस्ते
पनमुन्नं स्वस्नुसान सूमेवक्षि ॥
न ॥ सपसप-त्कृतं नं ग क्षिमत
स्वपश्यव ॥ नवष्टवपवक्त्रपेत्त
वाक्ष तिलगाल्पवः ॥ ९ ॥ नम
यपतस्तन नक्षत्रनेविमेतमः ॥

ग. वि. पू. ५८

ऋतजितः सत्त्वः सुहृद्विवर्जितः ॥

११ ॥ सेतु [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १२ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १३ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ १४ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥

१५ ॥ नमः [illegible] नमः

[illegible]

सू॰ वि॰ मु॰ ५७

[illegible]

[illegible]

[illegible]

भवभ्रमनभा ॥ ७ ॥ किमवं कमलक

[illegible]

॥ ९ ॥ [illegible]

॥ १० ॥ [illegible]

॥ २० ॥

॥ १३ ॥ [illegible]

ति॰
भ॰
११

ष्टुभमभा ॥ तस्मिन्नत्र त्रिसमयामीन
वन्दूकवणमहेन्द्रमणिभा ॥ ८ ॥ फुल्ल
धूमोपयोकनं प्रतजोत्पकोमञ्जैः
धुतिक्रमैर्नवनिविडंबमाधिम
सुक्ष्मलभा ॥ ९ ॥ मन्ये सिन्दूरगुच्छ
तरुं लितस्व सन्ध्येयोगिनः ॥ वस्तु
त्रिहयबन्धं स्फुरं तरुलतिवैभ
लभा ॥ १० ॥ धूप्रकृतं समिद्धं दत्त वध
ष्वरुचिस्त्रिकित्विधना ॥ धृत
करोल्लांसमलहृत्तनेत्रे श्रद्धान्त
वना ॥ ११ ॥ यस्य भव सौम्यवितरणं
येमिनः सुधमावित्तमा ॥ कपूर

गवते श्रीयेङ्कटनम गूप्वलीकृनः
धूमतवरूनभ्यैलंपद्मणङ्कफ्लै
काल्पभा॥ चीलैद्रनफलश्रूमंस
द्युमत्रुणरूपायभा॥ ०३॥ लमदृ
कुलकिह्लिक्कपीतकैमैयवम
मभा॥ श्रीवङ्कवफ्लमंङ्ग्लैकुसु
ठमत्रूकुरभा॥ ०२॥ मडश्चिवै
ठकुलयपपशीउंवनभालया॥
पठदूरुनवलयक्तिगीरश्भत
धरभा॥ ०४॥ कुक्लीगुलैल्लमघै
लिंहदयम्भैलविधुरभा॥ भक्त
चीयतमंमन्तुंभवेनयनवहनभा॥ ०॥

[illegible]
[illegible] || [illegible]
[illegible] || ११ || [illegible]
[illegible] || [illegible]
[illegible] || १२
[illegible]
[illegible] || [illegible]
[illegible] || १३ || [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] || १४ || [illegible]
[illegible]

गुह्यरूपा ॥ उत्पन्ना च बिल्वमवाप
सद्बाल्येन्दुकिरणतप्तसूर्य
प्रकाशभा ॥१०॥ किंस ॥ पञ्चम
निष्ठतमादिदृष्टवैश्वकौशिकज्ञेनभ
बुधितं नामिवः सिवेकृता ॥ श्रुत
मतः सभलसैनलनिभ्रभूवर्ङ्कृष्ट
क्लिंकणवतक्षरच्छरविध्रभा ॥११
लवस्पर्यं ललललैमनयालनद्
नक्तुपिलभृभ्रवक्षितयवित
तः ॥ कवेत्रिणयकपलवद्वैशिष
यद्देलालिंतफुक्षिविहिरठवभूत
रता ॥१२॥ कतुभपलुकृलवेशपि

[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १८ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १९ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible]

[illegible] 20

[illegible] ॥ १० ॥

[illegible] ॥ ११ ॥

[illegible] ॥ १२ ॥

[illegible]

तस्थिन्न किंभुवि स्थितः सुरपङ्क्तः प
रा हि॥ हे तद्भवत्सु मतिकृद्दिशः
प्रयोरक्ष्य न्नविपातउपलब्धपद्म
कृपूः॥ १६॥ हेनं मतं पञ्चमतमः
श्रितपत्रिवासिद्धविपसृतिपते
सृणमक्ष्यकुपमा॥ हेवाङ्गपतमप
हेवचमाकृपतंवाश्रीयप्रपविध
तं मकिरामकृवूः॥ १७॥ हेदेपि
हेववमगाःमपत्नकन्मयावक्ष्यन्न
कंपूतिमभीक्ष्णतापवमाम्नुः॥ तंम
पूपकृमपित्रुक्षमपापिवैणःश्रु
धुंपन्नत्रुठमाउंपुतिवभूवभुः॥ १८॥

[illegible]

स्त्रैकैस्त्रैपयचतुर्भगीविनः ॥३॥ ॥

ॐ श्रीसूर्याय कृमुः ॥ ॐ नयनव

नकृन्दमल्लिन्तहेधनक्रीतपुं

द्धभिपयक्रद्धान्नअभवकद्धुभम

सुक्तनः ॥ सुगनगदेकश्चभतिप

लसकुवेपकेन्तकासिक्रनय

द्धन्नससतेत्रप्तेविगमः ॥४

यकद्धपलबुभेतक्रवयचतुवसेध

तयसतेक्रयसुभवेविक्लेह्म

ष्टिर्विगतज्वराः॥ श्रुतप्रेयोफलस्तु
यिमर्तेवमनस्कां स्थितिं कथमवध
र्भवति कृविमत्पथविरुत्तमाः॥ ३॥
उत्तितवमश्रवस्मूपिपत्तिप्रिल्मले
कमलस्थपल्कथमन्ते स्त्रिमव
णहृतपंसिल्यकृः॥ किंपुत्रपुत्र
श्रुणमविपुत्रसयकल्लत्रुणःपव
मठल्लत्रियेपकमल्लभ्रुपाप्त
र्भवमा॥ ७॥ सुतयवडवस्त्रमदुम

३॥

वे.
सु.
१५

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ऽत्र मपि ॥ ४ ॥ युगत्रविमिश्रुयेनि
युविसविवकै ततसा ततत्त्वमतः
स्वकर्मन्नलवन्तुगत्त्वेकतिः ॥
सपवितप स्वगयुवितपंतवग
ममंविरलापिवेवयत्तुक्षिविप
त्ववाङ्करमपा ॥ ७ ॥ स्वगत्तयुवे
युमीयुवद्विपत्तुरंवरल्तवप
कवमतुपिलमत्रिपांतैमगत्म
उतितगतिंविविह्रकवयेनिगम

[illegible] ॥ ०१ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ०२ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

13

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]

𑆇𑆠𑆥𑆳𑆑𑆸𑆩𑆠𑇀𑆫𑆶𑆮𑆴𑆓𑆳𑆱𑇀𑆮𑆴𑆱𑇀𑆩𑆴𑆠𑆼𑆤𑆴𑆖

𑆠𑆶𑆂 𑇅 𑆥𑆴𑆱𑆮𑆼𑆥𑆱𑇀𑆫𑆴𑆤𑆴𑆮𑆳𑆤𑆴𑆓𑆴

𑆮𑆳𑆤𑆪𑆴𑆠𑆀 𑆱𑇀𑆪𑆴𑆪𑆠𑆼 𑆥𑆑𑆂

𑆥𑆬𑆮𑆤𑆴𑆠𑇀𑆫𑆤𑆼𑆮𑆴𑆨𑆳𑆥𑆂 𑇅 𑇑𑇐 𑇅

𑆢𑆨𑆑𑆫𑆂 𑆱𑆑𑆶𑆥𑆴𑆬𑆑𑆑𑆩

𑆘𑆴𑆥𑆂 𑆇𑆮𑆮𑆬𑆴𑆱𑇀𑆮𑆤𑆴𑆠𑇀𑆫𑆴𑆱𑆩𑆑

𑆠𑆶𑆬𑆪𑆳𑆤𑆴𑆩𑆴𑆢𑆂 𑇅 𑆮𑆢𑆑𑆼𑆪𑆴𑆀

𑆬𑆑𑆴𑆢𑆴𑆥𑆠𑆴𑆮𑆮𑆴𑆱𑇀𑆮𑆩𑆼 𑆮𑆴𑆑𑆥

𑆢𑆴𑆱𑆢𑆪𑆼𑆢𑆪𑆴𑆠𑆀𑆑𑆮𑆠𑆂 𑆥𑆑𑆴𑆠𑆂 𑇑𑇑 𑇅

𑆮𑆾 𑆥𑆶 𑇘𑇗

ध्रियमाणेऽतवः स्मृरल्वेत्रुतिमि
तपुले विदग्धश्री कृपया याश्विप
रस्मृतिभ्रंततः ॥ नकिंपरमस्य
कच्छिदयैनपरस्त्रत्वैच्छित्र
तकायदस्तुतरस्तूर्तल्लंदयात ः १७ ॥
सुयविमितवृत्रभुतहृतैयनि
मवगतः तद्विनमभूतैतिवि
यमेकृत्रैतरम ॥ मृलाविसय
कृयंतदविभ्रष्टनियक्कृतैवन्दम

[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]

𑆯𑆷𑆮𑆴𑆩𑆠𑆴𑆑𑆴𑆁𑆤𑆳𑆁𑆱𑆷𑆪𑆠𑆱𑆶𑆢𑆶𑆤𑆴
𑆩𑆖𑆫𑆩𑆵 𑇆 𑆝𑆠𑆴𑆩𑆑𑆬𑆤𑆠𑆁𑆩𑆴𑆰
𑆤𑆽𑆠𑆫𑆠𑆾𑆪𑆱𑆫𑆁𑆰𑆳𑆥𑆪𑆠𑆴𑆑𑆼𑆮𑆴𑆑
𑆰𑆮𑆴𑆑𑆠𑆼𑆰𑆶𑆤𑆴𑆫𑆱𑆶𑆑𑆳𑆟𑆵 𑇆 𑇑𑇕 𑇆 𑆑
𑆮𑆴𑆥𑆑𑆥𑆢𑆾𑆠𑆩𑆑𑆤𑆳𑆤𑆶𑆪𑆾
𑆮𑆴𑆩𑆑𑆱𑆶𑆠𑆠𑆮𑆢𑆶𑆑𑆱𑆶𑆬𑆼𑆪
𑆜𑆴𑆑𑆴𑆑𑆶𑆬𑆬𑆂 𑇆 𑆑𑆥𑆴𑆠𑆴𑆩𑆓𑆑𑆼
𑆤𑆯𑆶𑆮𑆴𑆪𑆱𑆶𑆢𑆷𑆤𑆴𑆤𑆴𑆢𑆰𑆳𑆥𑆴𑆤𑆪
𑆤𑆑𑆥𑆩𑆠𑆴𑆪𑆑𑆪𑆩𑆫𑆢𑆢𑆮𑆩

𑆮𑆁° 𑆓𑆶°
30

घनो ॥ ७४ ॥ अतऊर्ध्वं प्रवक्ष्याम्यहं अभि
त्रिमित्रतत्त्वकं, हृदिसंस्थितं
शिक्षुमभाधान्तत्र्योदयसूक्तो ॥ ह
वक्त्रये विकल्पेषु धियेत्वयत्न
वयक्ष्मवत्रिं वतीं ततः वर्त्ति
तिकत्र्यालच्नो ॥ ७५ ॥ यमिन
अभूत्प्रत्रियत्वये हृषिकंभम
ग्नकृतपिणमेअतं हृदिणतेभ
उक्तं मलिः ॥ सम्पूर्णपयेति

[illegible]

[illegible] ॥ श्री ३१॥

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥३३॥

[illegible]

[illegible]

ननमं वरज्ञः ॥ पद्मवरशं मि
वन्दित्वयमामक्तब्रूत्व स्तुति
किल्लोत्रितिरमनेनकवति
पतः ॥ ७७ ॥ इति श्री कणवते
मक्वरले दमभ्रुवे वरु
सुतिः समाप्तः ॥ शुभं भवतु ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ह्रीं नमो नारायणाय ॥ ॥ श्री सर्वसम्पद्देवे
नारायणाय सकलमङ्गलप्रदाय श्रीवत्साङ्कि ॥ ना
रायण सुखालयपते ॥ ओं नमः ओं अभिमुखाय नमः ॥
ब्रह्मरूपाय प्रद्युम्न ॥ श्री विष्णुभक्तप्रिय
॥ नारायण कृष्ण लयपते ॥ नारायण सुख
लयपते ॥ नारायण सुखलयपतिः सुखलयपते ॥
नारायण सिद्धि लयपते ॥ नारायण महे
श्वरदेव ॥ नारायण देवकीनन्दन नन्दसुत ॥ नारायण
सुरासुरवन्दितः ॥ अच्युतदेवदेवः अच्युतानन्दमय
अच्युतानन्दमय ॥ अच्युतानन्ददायिने ॥ ना
रायण देवदेव परब्रह्मरूपिणे ॥ नारायण सुदेव
ते ॥ नारायण सुलीलापते ॥ ॥ श्री सर्वसम्पद्देव
देवेश देवकीनारायणाय ॥ लक्ष्मीनारायणाय
शिवशक्तिनारायणाय नमः ॥ महालक्ष्मीनारायणाय नमः ॥ स
र्वेश्वरीसहनारायणाय ॥ सुरासुरवन्दितनार
ायण नमः ॥ अच्युताक्षयनारायणाय नमः ॥ कृष्ण

ज्ञानाय नमः ॥ त्रिसप्तज्ञानाय नमः ॥ पञ्चज्ञाना
य नमः । कृष्णात्मनारायणाय नमः ॥ अग्र अग्रात्मनाराय
णाय नमः । ऊर्ध्वज्ञानाय नमः ॥ नाराय नमः । एवं स
र्वं यः कृत्वा यज्ञं करोति ॥३॥ यदि निरेति
फले निनामाणि ते ति विकल्पि निरज्ञतः ॥ त्र
वृत्ते वारके नारायण नमः तद्दिव्यो यो भिकृ ज्ञितः ॥
॥ यरवेवेन सविष्णु लोके नवति ॥ तत्र सम
रविन्दद । सतः प्रणवात्प्रमात्मा ॥ पुरति
परमं परं विष्णुगणं परमहायम् ॥ एकत्र
नारायणाय प्रतिषधं ॥ चिदवैनारायणाय प्रतिष्ठ
परिषदमणीत समचेहः पापे हि विभवे
नवति सम चेहे येरे हे विसने नवति ॥ सम
वन्नमानप्रेति सचं सलोकनप्रेति ॥ सम
त्रमगद्दु सति तत्रुमगच्छति ॥ विमितेत्र
गुहादरेत्र समंतिपज्ञ नाराय नमः वेद्रप
रिभृत ॥ विमितेक्षदां नमंतितेमदेवे

२९
१०३

पञ्चमन्त्रपात्रके पपात्रकस्तुमस्तुते ॥ श्रीनाथाय

नमः ॥ सायुज्यं समर्प्येति ॥ श्रीनाथाय नमः

सायुज्यं समर्प्येति ॥ इति श्रीनाथाय सम्प्र

दत्तं समर्प्येति ॥ ॥ ॥ छ ॥ ॥ ॥ ॥

ठं पञ्चमं पूजयेत् समस्तु सिद्धिं ठं सोऽस्तु ॥ ॥ ठं

ति ॐ श्रीनाथाय नमः ॥ ॐ श्रीनाथाय नमः सस्तु

तु नं सिद्धिं तते सन्तु ॥ सिद्धिं सर्वसिद्धिं तते

लय सर्वसिद्धेस्तु ॥ श्रीनाथाय नमः लाभश्रीलं भ

नमः पुत्रपौत्रसन्तु ॥ पवित्रं तिष्ठति सर्व

पापं विनश्यति ॥ ॥ यतिस्त्रीतीर्थ

किं लपचद्रवैसस्तु स्तु सलिलैकमसन्तु ॥

तस्मैकसर्वतत्त्वं तत्त्वसिद्धं तत्त्वके सर्व ॥ ॥ श्री

ठगाव वासं ॥ ॥ नमः श्रीनाथाय नमः

सर्व द्रव्यैः नमः ॥ पर्वतेकसर्वसिद्धिं सिद्धं

केऽर्थं सदृशं ॥ ॥ ॐ त्रिकालज्ञ नमस्तेस्तु [illegible]

[illegible] सर्वरूपिणे ॥ यज्ञेशाय नमस्तेस्तु सर्वसाक्षि-

णे नमः ॥ [illegible]

[illegible] ॥ नमस्ते सर्वलोकेश सर्वपापप्रणाशन ॥ नमो

[illegible] ये नमः ॥ नमो यज्ञवरा-

[illegible] ये नमः ॥ त्रिविक्रमाय रामाय

वैकुण्ठाय नारायणाय ॥ नमो ब्रह्मण्यदेवाय [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ये नमः ॥ [illegible] ये नमो नमः

लक्ष्मीप्रियाय [illegible] सर्वरूपिणे ॥ [illegible]

[illegible] रूपाय [illegible] ये नमः ॥ पीताम्बरा-

[illegible] ये नमः ॥ [illegible]

[illegible] रूपाय ये नमः ॥ [illegible] रूप-

[illegible] रूपाय ये नमः ॥ [illegible] रूपाय [illegible]

रूपाय ये नमः ॥ [illegible] रूपाय [illegible]

ये नमः ॥ [illegible] रूपाय नमः श्रीवत्स [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ॥ ॥ ॥
[illegible] ॥ 𑆱𑆩𑆳𑆥𑇂𑆠𑆂 ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मवंभिवीति ध्नीयाउ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सं० गो० ७३

[illegible] विनश्मयेत

[illegible]

सूक्ष्म [illegible]

सकृतेषु विलासुतैरलं द्वितीय
वल्लं पूरं वक्षस त्रिमि ॥ १० ॥ सके
त सध्यन्द्र विनि [illegible] चेयत विला
पवित्रमलं सपीतकृतरमं ॥
मितं पवं वृक्ष सक विभक्ति सद्वि
[illegible] त स [illegible] सपपिते सलः ॥ ११ ॥
एवं सक एतपदान्तवत्र ख
तत्र उषः पति विस्म डापितः ॥
त सुस नित क्षपापः पृकसकः
सः द्विपतै सलवत विमितु वतो ॥ १२ ॥

सुमनः वितीत स्नानसः

𑇄 𑆤𑆩𑆾 𑆨𑆓𑆮𑆠𑆼 𑆮𑆳𑆱𑆶𑆢𑆼𑆮𑆳𑆪 𑇆 𑇆 𑇆
𑇄 𑆃𑆱𑇀𑆪 𑆯𑇀𑆫𑆵𑆨𑆓𑆮𑆢𑇀𑆓𑆵𑆠𑆳𑆩𑆳𑆬𑆳𑆩𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫
𑆱𑇀𑆪 𑇆 𑆯𑇀𑆫𑆵𑆨𑆓𑆮𑆳𑆤𑇀𑆮𑆼𑆢𑆮𑇀𑆪𑆳𑆱 𑆉𑆰𑆴𑆂 𑇆
𑆃𑆤𑆶𑆰𑇀𑆜𑆶𑆥𑇀𑆗𑆤𑇀𑆢𑆂 𑇆 𑆯𑇀𑆫𑆵𑆑𑆸𑆰𑇀𑆟𑆂 𑆥𑆫𑆩𑆳
𑆠𑇀𑆩𑆳 𑆢𑆼𑆮𑆠𑆳 𑇆 𑆃𑆯𑆾𑆖𑇀𑆪𑆳𑆤𑆤𑇀𑆮𑆯𑆾𑆖𑆱𑇀𑆠𑇀𑆮𑆁
𑆥𑇀𑆫𑆚𑇀𑆘𑆳𑆮𑆳𑆢𑆳𑆁𑆯𑇀𑆖 𑆨𑆳𑆰𑆱𑆼 𑆅𑆠𑆴 𑆧𑆵𑆘
𑆩𑇀 𑇆 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆣𑆫𑇀𑆩𑆳𑆤𑇀𑆥𑆫𑆴𑆠𑇀𑆪𑆘𑇀𑆪 𑆩𑆳𑆩𑆼
𑆑𑆁 𑆯𑆫𑆟𑆁 𑆮𑇀𑆫𑆘 𑆅𑆠𑆴 𑆯𑆑𑇀𑆠𑆴𑆂 𑇆 𑆃𑆲𑆁
𑆠𑇀𑆮𑆳 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆥𑆳𑆥𑆼𑆨𑇀𑆪𑆾 𑆩𑆾𑆑𑇀𑆰𑆪𑆴𑆰𑇀𑆪𑆳𑆩𑆴 𑇆

𑆓𑆵. 𑇐 𑇐

𑆃𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆩𑆂 𑇄 𑆅𑆠𑆴 𑆑𑆵𑆬𑆑𑆩𑇀𑇆 𑆤𑆽𑆤𑆁

𑆗𑆴𑆤𑇀𑆢𑆤𑇀𑆠𑆴 𑆯𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆳𑆟𑆴 𑆤𑆽𑆤𑆁 𑆢𑆲𑆠𑆴 𑆥𑆳

𑆮𑆑 𑆅𑆠𑆴 𑆲𑆸𑆢𑆪𑆳𑆪 𑆤𑆩𑆂𑇆 𑆤 𑆖𑆽𑆤𑆁

𑆑𑇀𑆬𑆼𑆢𑆪𑆤𑇀𑆠𑇀𑆪𑆳𑆥𑆾 𑆤 𑆯𑆾𑆰𑆪𑆠𑆴 𑆩𑆳𑆫𑆶𑆠𑆂

𑆅𑆠𑆴 𑆯𑆴𑆫𑆱𑆼 𑆤𑆩𑆂𑇆 𑆃𑆖𑇀𑆗𑆼𑆢𑇀𑆪𑆾

𑆪𑆩𑆢𑆳𑆲𑇀𑆪𑆾𑆪𑆩𑆑𑇀𑆬𑆼𑆢𑇀𑆪𑆾𑆯𑆾𑆰𑇀𑆪 𑆌𑆮𑆖 𑆅𑆠𑆴

𑆯𑆴𑆒𑆳𑆪𑆽 𑆤𑆩𑆂𑇆 𑆤𑆴𑆠𑇀𑆪𑆂 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆓

𑆠𑆂 𑆱𑇀𑆡𑆳𑆟𑆶𑆫𑆖𑆬𑆾𑆪𑆁 𑆱𑆤𑆳𑆠𑆤

[illegible] ॥ [illegible]

नः [illegible] नमः [illegible]

पः ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] नमः ॥ [illegible]

[illegible]

नः ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

गी० ० ३

[illegible]

सर्ववेद्भिपरमानन्दमापरमा ।

यं ब्रह्मवल्लीन्द्रवन्दमहतः ।

श्रुतिभिर्भिरैः श्रुविचभैः मान्द

पन्द्रमोपविपन्द्रिनापत्रियंम

मताः ॥ श्रुनाव भ्रितस्मतेन

मनसा पद्मत्रिसंयोगिनेयश्र

त्रंनविन्दः । सुरासुरगणो द्भव

यत्स्मृनमः ॥ पातरा द्भूतवाम ॥

सुप्रचक्रं पञ्चकेषु
सहितस्तु: त्रिपुरां सिद्धे सदा:
त्रिविद्या रूपा: पञ्च॥

रस्त्रवीरवाचा ॥ ओं नमो देवि देवि पञ्च

पञ्चमवलवमध्यमः ॥ १ ॥

सुधे
सस्य कं तविसिध्यते ता विरोध

हि तेजः
क्लिष्टं तम ॥ नायक ममशिरस्य
सकृत्स्नजम्

मन्त्रं त्वं वीभितं ॥ २ ॥ तव
सत्तुं मन्त्रं जीवितं

ह्रीं पञ्चकल्पञ्चपञ्चममिति

स्त्वयः ॥ सस्त्रज्जमा विकल्पस्मि
कृतिसूत्रः

मस्तिभुवनम ॥ ३ ॥ सर्वे मर

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ११ ॥

युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नै-

ष्ठिकीम् ॥ अयुक्तः कामकारेण

फले सक्तो निबध्यते ॥ १२ ॥

सर्वकर्माणि मनसा संन्यस्यास्ते सुखं वशी

नवद्वारे पुरे दे-

ही नैव कुर्वन्न कारयन् ॥ १३ ॥ न

गी० ०५

अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान्कपि

ध्वजः॥ प्रवृत्ते शस्त्रसंपाते धनुरु

द्यम्य पाण्डवः॥ २०॥ हृषीकेशं

तदा वाक्यमिदमाह महीपते॥

सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्यु

त॥ २१॥ यावदेतान्निरीक्षेऽहं

योद्धुकामानवस्थितान्॥ कैर्मया

सह योद्धव्यमस्मिन्रणसमुद्यमे॥ २२

येऽपि भागा न वेदकृतं या यात्रेऽस्मा

यद्यपि वर्त्तते

गतः ॥ पात्रपूर्वस्वदेहं स्वेदं द्वि

विलयं कर्तुकामाः

यस्मिन् कीर्त्यते ॥ २३ ॥ अथ

ततः किं ... मिश्र ... आय

... अथ ... पर्व ... ॥

... निवृत्त ...

... निवृत्ते ॥

वाम ॥ पूर्व भूते हृत् भी के मे गुरु

... तन्तु

के मे न तर्त ॥ मिन ये न तु ये म ... भू

पथि दूर देहे तु अमा ॥ २५ ॥ दीप

येः

दे ... प्रभा पतः अथ विधं समा कीर्ति

... नस्मा

तु भा ॥ उवाच स पाद्य पश्चात् त्वम् अव

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

𑆮𑆴𑆥𑆫𑆵𑆠𑆳𑆤𑆴 𑆑𑆼𑆯𑆮 ॥ 𑇓𑇑 ॥ 𑆤

𑆖 𑆯𑇀𑆫𑆼𑆪𑆾𑅿𑆤𑆶𑆥𑆯𑇀𑆪𑆳𑆩𑆴 𑆲𑆠𑇀𑆮𑆳 𑆱𑇀𑆮𑆘𑆤

𑆩𑆳𑆲𑆮𑆼 ॥ 𑆤 𑆑𑆳𑆁𑆒𑇀𑆰𑆼 𑆮𑆴𑆘𑆪𑆁 𑆑𑇀𑆫𑆸

𑆰𑇀𑆟 𑆤 𑆖 𑆫𑆳𑆘𑇀𑆪𑆁 𑆱𑆶𑆒𑆳𑆤𑆴 𑆖 ॥ 𑇓𑇒 ॥

𑆑𑆴𑆁 𑆤𑆾 𑆫𑆳𑆘𑇀𑆪𑆼𑆤 𑆓𑆾𑆮𑆴𑆤𑇀𑆢 𑆑𑆴𑆁 𑆨𑆾𑆓𑆽𑆫𑇀

𑆘𑆵𑆮𑆴𑆠𑆼𑆤 𑆮𑆳 ॥ 𑆪𑆼𑆰𑆳𑆩𑆫𑇀𑆡𑆼 𑆑𑆳𑆁𑆒𑇀𑆰𑆴

𑆠𑆁 𑆤𑆾 𑆫𑆳𑆘𑇀𑆪𑆁 𑆨𑆾𑆓𑆳𑆂 𑆱𑆶𑆒𑆳𑆤𑆴 𑆖 ॥ 𑇓𑇓

𑆠 𑆆𑆩𑆼𑅿𑆮𑆱𑇀𑆡𑆴𑆠𑆳 𑆪𑆶𑆢𑇀𑆣𑆼 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆟𑆳𑆁𑆱𑇀𑆠𑇀𑆪𑆑𑇀𑆠𑇀𑆮𑆳 𑆣

[illegible] || 𑇓𑇓 || [illegible]

[illegible] ||

[illegible]

[illegible] || 𑇓𑇔 || [illegible]

[illegible]

[illegible] || [illegible]

[illegible] || 𑇓𑇕 || [illegible]

[illegible]

[illegible] ||

शत्॥ विसृज्य सशरं चापं शोक-
संविग्नमानसः ॥ ४७ ॥

ॐ तत्सदिति श्रीभगवद्गीतासूपनिष-
त्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृ-
ष्णार्जुनसंवादे, अर्जुनविषादे
नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

ततः किंचिद् [illegible] ॥ [illegible]

सञ्जय उवाच ॥ तं तथा कृ-
पया, विष्टमश्रुपूर्णा, कुलेक्षणम्,

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

यं कूर्मो ऽङ्गानीव सर्वशः ॥ इन्द्रियाणी-
न्द्रियार्थेभ्यस् तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठि-
ता ॥ विषया विनिवर्तन्ते निराहा-
रस्य देहिनः ॥ रसवर्जं रसो ऽप्य् अस्य
परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥ ५९ ॥ यततो
ह्य् अपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्र-
सभं मनः ॥ ६० ॥ तानि सर्वाणि

गी.

३५

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

गी० ३ ३३

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पी.

३७

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पश्यति स पश्यति ॥ ५ ॥ संन्यासस्तु

महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः ॥

योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति ॥ ६ ॥ योगयुक्तो विशु-

द्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः ॥

सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि

न लिप्यते ॥ ७ ॥ नैव किंचित्क-

रोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित् ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

गी.
८
१०

[illegible]

[illegible]

ॐ विष्णुः [illegible] परमं ध्येयं [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १३ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ १४ ॥

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सुश्रुतिमात्रं श्रीभक्तिलि

मेवरा ॥ ३५ ॥ देवाः रणमुक्तंम

भतेलेसमंकुवमा ॥ क० ॥ षा

षवाः गहिवैतेन किंस्तुवेचत

वालन ॥ विमूहदामिकुं

नक्षमकुं मेवनाभितेलागत

क३ ॥ ६ तिश्रीकणवमीतस्र

पतिधकुंधक्रविकुर्धावेण

[illegible]

मिस्तुमि ॥ १ ॥ नतं सह्लमिह

सह्लमवेन सलोकिकं

भूमन्ते वे वह्यमहृथ ॥ सिद्धं स

स्तुनस्कं सुभ धउल भ

स्त्रमिते सह्म: पह्यमेयोगमिह्म

रम् ॥ २ ॥ अस्त्र यउवाम ॥ ॥

हृ धउसभू

स्वभूह्ना उते रल ह्म न ये ग स्र

पश्तुं धवश्रद्भि

ते नदि: ॥ मह्वयभभधउय

उपंकसंह्लसमिहे सुदि ॥

पशं नुयमिह्म रभ ॥ ३ ॥ सन्ते

कवह्ल नयनं भवे कसुउसम

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कमय

ज्ञाप्तिक्रियैकगुणवर्णरूपे तस्मै

पूर्वोक्त

सुरोत्तमवरप्रसीद ॥ विश्वे

पूर्वं

सिद्धि सिद्धिवरप्रमुखं नविधु

किमर्थं सर्वपूर्णत्वं श्रीत्रिनयनाभि ॥

एन सिद्धवपूर्णत्रिसं ॥ ३० ॥

एवं पूजितः सन् श्रीगणपतिः ॥ कल्लोलिनीति हे हेः

श्रीगणपतेवम ॥ कल्लोलि

सङ्घः संगतुम

लोकत्रयजन्तुचक्षुर्लोकत्रयम

मत्र्यलोके हुंगत्वं विनयि

गत्वा सिद्धपूर्णतः ॥ इति पिं

नरश्रीविमुक्ति

नरविमुक्तिमपवर्गमभिहितः प

गी॰

००

७३

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं तत्क्षा-
मये त्वामहमप्रमेयम् ॥ ४२ ॥
पितासि लोकस्य चराचरस्य
त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान् ॥ न
त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो लोक-
त्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव ॥ ४३ ॥ त-
स्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्र-
सादये त्वामहमीशमीड्यम् ।

गी. ११ ७५

[illegible]

[illegible] 𑇆

[illegible]

[illegible] 𑇆 𑇙 𑇆 𑆄𑆫𑇀𑆘𑆶𑆤 𑆇𑆮𑆳𑆖 𑇆 [illegible]

[illegible]

[illegible] 𑇆 [illegible]

[illegible] 𑇆 𑇑𑇐 𑇆

𑆯𑇀𑆫𑆵𑆨𑆓𑆮𑆳𑆤𑆶𑆮𑆳𑆖 𑇆 [illegible]

[illegible] 𑆯𑇀𑆫𑆵𑆨𑆓𑆮𑆳𑆤𑆶𑆮𑆳𑆖 𑇆

[illegible] 𑇆

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

दुःखसुखः क्षमी ॥ १३ ॥ सन्तु
ष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनि
श्चयः ॥ मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो
मद्भक्तः स मे प्रियः ॥ १४ ॥
यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्वि
जते च यः ॥ हर्षामर्षभयोद्वे
गैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः
॥ १५ ॥ अनपेक्षः शुचिर्दक्ष

गी.
१२
१००

[illegible]

𑆕𑇀𑆓𑆮𑆴𑆮𑆫𑇀𑆘𑆴𑆠𑆂 𑇆 𑇑𑇘 𑇆 𑆠𑆶𑆬𑇀𑆪𑆤𑆴
𑆤𑇀𑆢𑆳𑆱𑇀𑆠𑆶𑆠𑆴𑆫𑇀𑆩𑆿𑆤𑆵 𑆱𑆁𑆠𑆶𑆰𑇀𑆛𑆾 𑆪𑆼𑆤 𑆑𑆼𑆤
𑆖𑆴𑆠𑇀 𑇆 𑆃𑆤𑆴𑆑𑆼𑆠𑆂 𑆱𑇀𑆡𑆴𑆫𑆩𑆠𑆴𑆫𑇀𑆨
𑆑𑇀𑆠𑆴𑆩𑆳𑆤𑇀𑆩𑆼 𑆥𑇀𑆫𑆴𑆪𑆾 𑆤𑆫𑆂 𑇆 𑇑𑇙 𑇆
𑆪𑆼 𑆠𑆶 𑆣𑆫𑇀𑆩𑇀𑆪𑆳𑆩𑆸𑆠𑆩𑆴𑆢𑆁 𑆪𑆡𑆾𑆑𑇀𑆠𑆁 𑆥
𑆫𑇀𑆪𑆶𑆥𑆳𑆱𑆼𑆠𑆼 𑇆 𑆯𑇀𑆫𑆢𑇀𑆢𑆣𑆳𑆤𑆳 𑆩𑆠𑇀𑆥
𑆫𑆩𑆳 𑆨𑆑𑇀𑆠𑆳𑆱𑇀𑆠𑆼𑆠𑆵𑆮 𑆩𑆼 𑆥𑇀𑆫𑆴𑆪𑆳𑆂 𑇆 𑇒𑇐
𑆅𑆠𑆴 𑆯𑇀𑆫𑆵 [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥13

ममापुण्ये भः श्रीकृष्णवक्त्रोद्गीताः ।

गीताः सुगीताः कर्तव्याः किम-

न्यैः शास्त्रविस्तरैः ॥ यः स्वयं पद्म-

नाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृताः ॥

[illegible] ह्रुं नमः ॥ ॥

गी

13

122

[illegible] विष्णुं [illegible] विष्णु [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ७ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]